THE RESEARCH JOURNAL OF ENVIRONMENT, CULTURE AND DEVELOPMENT (T.R.J.E.C.D.)
A Monthly International Journal of Multidisciplinary Research, Peer Reviewed-Refereed & Impact Factor - 4.8
ISSN : 2349-3313, Vol. : 10, No. : 8, January - 2025, Conference Special Issue Hindi

समाज और अर्थव्यवस्था पर पर्यटन का प्रभाव : एक विश्लेषण

Sunil Pal
Assistant Professor, Department of Mathematics, Gopinath Singh Mahila Mahavidyalaya, Garhwa

पर्यटन विश्वव्यापी गतिविधि है जो न केवल आर्थिक विकास का एक प्रमुख स्रोत है, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक आदान–प्रदान का माध्यम भी है। यह किसी भी राष्ट्र के लिए राजस्व अर्जन, रोजगार सृजन और वैश्विक पहचान को सुदृढ़ करता है। हालांकि, पर्यटन के विकास से पर्यावरणीय और सांस्कृतिक हानियों की चुनौतियां भी सामने आती है। पर्यटन से एक ओर जहां बहुत से अन्य उद्योगों को मदद मिलती है वहीं दूसरी ओर यह सामाजिक समानता तथा न्याय की स्थापना के साथ ही जीवन स्तर को बेहतर बनाने में भी विशेष रूप से सहायक है। कहा जाता है कि पर्यटन आज जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बन चुका है।

विश्व के सबसे तेज बढ़ते पर्यटन उद्योग के प्रभाव लाभदायक है तो हानिकारक भी कम नहीं है। जी हाँ, जैसे–जैसे पर्यटन उद्योग की वैश्विक पहचान बनी है वैसे–वैसे ही इसके प्रभाव भी विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग रूप से उभर कर सामने आने लगे हैं। कभी भ्रमण की लालसा के लिए, कभी तीर्थाटन से मनोकामनापूर्ति के लिए या फिर व्यापार के लिए विदेश–गमन तक का सफर तय करता पर्यटन अब जीवन का अंग–सा बन गया है। बहुआयामी होते पर्यटक ने जिस तेजी से रफ्तार पकड़ी है, उसी तेजी से इसके प्रभाव लगभग सभी क्षेत्रों पर पड़ रहे हैं। समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति, पर्यावरण, संस्कृति आदि पर कैसे पर्यटन अपने अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव डालता है, इसे जानकर और समझकर ही पर्यटन के बेहतर कार्यान्वयन को सही रूप में परिणत किया जा सकता है।

पर्यटन के सकारात्मक प्रभाव :–

आर्थिक प्रभाव :– पर्यटन उद्योग विश्व की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है। यह स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर आय, रोजगार और निवेश का स्रोत है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में पर्यटन आर्थिक विकास का एक प्रमुख साधन है। पर्यटन विदेशी मुद्रा का एक प्रमुख स्रोत है। विदेशी पर्यटकों द्वारा की गई खरीदारी, होटल खर्च और सेवाओं के उपयोग से अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है। उदाहरणः 2023 में भारत पर्यटकों से लगभग 30 अरब डॉलर की आय अर्जित की। पर्यटन उद्योग लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है। आंकड़ों के अनुसार, भारत में पर्यटन क्षेत्र ने 2022 में लगभग 4.2 करोड़ लोगों को रोजगार प्रदान किया। पर्यटन स्थलों के पास छोटे व्यवसायों जैसे, हस्तशिल्प, स्थानीय भोजन विक्रेता और स्मृति चिन्ह विक्रेताओं को बढ़ावा मिलता है। स्थानीय उत्पादों का निर्यात भी बढ़ता है, क्योंकि पर्यटक इन्हें खरीदकर अपने देशों में ले जाते हैं।

पर्यटन के कारण सड़क, परिवहन, हवाई अड्डों और अन्य सुविधाओं का विकास होता है। इस विकास से न केवल पर्यटक बल्कि स्थानीय समुदाय भी लाभान्वित होते हैं। राजस्थान और गोवा में पर्यटन ने हवाई अड्डों और परिवहन सेवाओं को उन्नत करने में मदद की है। पर्यटन से दूर दराज और ग्रामीण क्षेत्रों में भी आय के स्रोत उत्पन्न होते हैं। ग्रामीण पर्यटन और होमस्टे प्रोग्राम ने कई क्षेत्रों में गरीबी घटाने में मदद की है। उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में इकोटूरिज्म ने स्थानीय विकास को गति दी है। पर्यटन करों (Tourism Taxes) के माध्यम से सरकार को राजस्व प्राप्त होता है। होटल कर, प्रवेश शुल्क और परिवहन कर सरकारी आय को बढ़ाते हैं। 2022 में भारत सरकार ने पर्यटन से 2.6 लाख करोड़ रुपए का कर राजस्व अर्जित किया।

पर्यटन उद्योग में आकर्षण से विदेशी कंपनियाँ भारत में निवेश करती हैं। भारत में होटलों, रेस्टोरेंट और टूरिज्म इंफ्रास्ट्रक्चर में FDI के माध्यम से पूंजी प्रवाह हुआ है। कई अंतरराष्ट्रीय होटल चेन जैसे **Marriott** और **Hilton** ने भारत में अपने होटल खोले हैं। पर्यटन क्षेत्र मौसमी आए का बड़ा स्रोत है। त्योहार, छुट्टियों और विशेष अवसरों के दौरान पर्यटन स्थलों पर आर्थिक गतिविधियां बढ़ती हैं। जैसे राजस्थान में सर्दियों और गोवा में गर्मियों के दौरान पर्यटन उद्योग चरम पर रहता है। धार्मिक पर्यटन जैसे कुंभ मेला, तिरुपति बालाजी और वैष्णो देवी यात्रा स्थानीय और राष्ट्रीय

स्तर पर आय के प्रमुख स्रोत हैं। अनुमान है कि 2019 के कुंभ मेले ने उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में 12000 करोड़ रुपए का योगदान दिया। पर्यटन विकास पिछड़े क्षेत्रों में निवेश और आय के अवसर प्रदान करके आर्थिक असमानता को कम करता है। यह ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संतुलन बनाने में मदद करता है।

सांस्कृतिक प्रभाव :– पर्यटन सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और समक्ष को प्रोत्साहित करता है। हालांकि पर्यटन का सांस्कृतिक प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में देखा जा सकता है।

पर्यटन के सकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव :– पर्यटन ऐतिहासिक स्थलों, परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित रखने के लिए आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराता है। कई स्थानों पर लोक संगीत, नृत्य, कला और शिल्प को संरक्षित करने में पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जयपुर का हवा महल और कच्छ के रणोत्सव जैसे सांस्कृतिक आयोजन इनके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। विभिन्न देशों और समुदायों के लोग एक दूसरे की परंपराओं, भोजन, भाषा और जीवन शैली से परिचित होते हैं। यह सांस्कृतिक समृद्धि और वैश्विक समझ को बढ़ावा देता है। जैसे विदेशियों द्वारा भारतीय योग और आयुर्वेद को अपनाया गया। पर्यटन के कारण हस्तशिल्प, पारंपरिक वस्त्र और अन्य स्थानीय उत्पादों की मांग बढ़ती है। इसमें स्थानीय कार्यक्रम और शिल्पकारों को प्रोत्साहन मिलता है। वाराणसी के बनारसी साड़ी और राजस्थान के ब्लू पॉटरी उद्योग इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। पर्यटन किसी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करता है। यह स्थानीय लोगों में गर्व और आत्म–सम्मान की भावना को बढ़ावा देता है। जैसे भारत की योग और आध्यात्मिकता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान है।

पर्यटन के नकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव :– पर्यटन स्थलों पर सांस्कृतिक परंपराओं का व्यवसायीकरण होने लगता है। मूल परंपराओं में बदलाव करके उन्हें पर्यटकों के आकर्षण के अनुसार डाला जाता है जैसे त्योहारों और परंपराओं को दिखावटी बनाने की प्रवृत्ति। बाहरी पर्यटकों के प्रभाव से स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों में क्षरण होता है। विदेशी रीति–रिवाजों और आदतों को अपनाने के कारण पारंपरिक संस्कृति प्रभावित होती है। जैसे पश्चिमी पहनावें और अहार शैली का बढ़ता प्रभाव। अधिक पर्यटकों के आगमन से ऐतिहासिक स्थलों और सांस्कृतिक धरोहरों को नुकसान पहुंचता है, जैसे ताजमहल की संगमरमर संरचना पर प्रदूषण का प्रभाव पड़ रहा है। वैश्वीकरण और पर्यटन के प्रभाव से स्थानीय और पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान धीरे–धीरे विलुप्त हो सकती है। जैसे स्थानीय भाषाओं का उपयोग घटनें और विदेशी भाषाओं के प्रयोग बढ़ने लगते हैं। पर्यटन स्थलों पर पर्यटक को स्थानीय लोगों के बीच जीवन शैली का अंतर सामाजिक असमानता को बढ़ावा देता है। यह सामाजिक तनाव का कारण भी बन सकता है।

सांस्कृतिक प्रभाव के समाधान :– सांस्कृतिक स्थलों को संरक्षित रखने और पर्यटन के माध्यम से उनकी महत्वता को बनाए रखने की नीति अपनाई जानी चाहिए। पर्यटन से लाभ का एक बड़ा हिस्सा स्थानीय समुदायों को देना चाहिए ताकि वे अपने परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखें। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों के आसपास पर्यावरणीय सुरक्षा के उपाय लागू किए जाने चाहिए। पर्यटक को और स्थानीय लोगों को सांस्कृतिक धरोहरों की महत्ता और उनके संरक्षण के महत्व के बारे में शिक्षित करना चाहिए।

पर्यटन का नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव :– पर्यटन का प्रभाव केवल आर्थिक और सामाजिक तक सीमित नहीं है। यह पर्यावरण पर भी गहरा असर डालता है। पर्यटन का अनियंत्रित और असंतुलित विकास प्राकृतिक संसाधनों वन्यजीवों और पारिस्थितिक तंत्र को हानि पहुँचता है। इससे नकारात्मक प्रभावों को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है।

प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन :– जल संकट : पर्यटन स्थलों पर होटल, स्विमिंग पूल और पर्यटकों द्वारा जल की अत्यधिक खपत होती है। जैसे राजस्थान और शिमला जैसे पर्यटन स्थलों पर जल संकट बढ़ रहा है। साथ ही बड़े होटलों और रिसॉर्ट में ऊर्जा का अत्यधिक उपयोग होता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन होता है।

जल प्रदूषण :– पर्यटकों द्वारा छोड़े गए कचरे और अपशिष्ट पदार्थो से नदियो, झीलों और समुद्रों का जल प्रदूषित हो जाता है गंगा नदी और गोवा के समुद्री तटों पर प्लास्टिक कचरो का जमाव इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है ।

वायु प्रदूषण :– पर्यटन स्थलों पर पहुंचने के लिए बढ़ते वाहनों और उड़ानों के कारण वायु प्रदूशण में वृद्धि होती है। हवाई यात्रा और वाहनों से उत्सर्जित

कार्बनडाई ऑक्साइड के कारण हिमालयी क्षेत्रों की वायु गुणवत्ता खराब हुई है।

ध्वनि प्रदूषण :– पर्यटन स्थलों पर अत्यधिक भीड़ और मनोरंजन गतिविधियों जैसे पार्टियों और संगीत समारोह के कारण ध्वनि प्रदूषण बढ़ता है।

पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान :– वन्यजीवों के प्रभाव से पर्यटन स्थलों पर अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप से वन्यजीवों का प्राकृतिक आवास प्रभावित होता है। जैसे कांजीरंगा और रणथंभोर जैसे राष्ट्रीय उद्यानों में मानव गतिविधियों के कारण वन्यजीवों पर दबाव बढ़ा है। पौधे और जीवों के विलुप्ति से पर्यटक गतिविधियों से वनस्पतियों और जीव जंतुओं की प्रजातियां विलुप्त के कगार पर पहुंच सकती है। पर्यटन स्थलों पर प्लास्टिक बोतलों, पैकेजिंग सामग्री और अन्य ठोस कचरे का जमाव होता है। जैसे लेह लद्दाख में पर्यटकों द्वारा छोड़ा गया प्लास्टिक का कचरा लोगों को परेशान करता है।

अत्यधिक भीड़–भाड़ से पर्यटक स्थलों पर बढ़ती भीड़ से प्राकृतिक और ऐतिहासिक स्थलों को क्षती पहुंचती है। ताजमहल की संगमरमर संरचना को प्रदूषण से खतरा हो रहा है। क्षरण से ट्रैकिंग, कैपिंग और ऑफ–रोड ड्राइविंग जैसे गतिविधियों से पहाड़ों और जंगलों का क्षरण होता है। पर्यटन क्षेत्र, विशेष रूप से हवाई यात्रा और बड़े रिसॉर्ट्स, ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में योगदान करते हैं। यह जलवायु परिवर्तन को तेज करता है, जो ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्र स्तर के बढ़ने और मौसम परिवर्तन का कारण बनता है।

नकारात्मक प्रभावों के समाधान :– पर्यटन नीतियों में सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। स्थानीय समुदायों को सांस्कृतिक गतिविधियों और पर्यटन विकास में शामिल करना चाहिए। पर्यटकों को स्थानीय परंपराओं और संस्कृतियों का सम्मान करने के लिए शिक्षित करना चाहिए। सांस्कृतिक धरोहरों की चोरी और तस्करी रोकने के लिए सख्त कानून लागू किए जाने चाहिए। स्थानीय भाषाओं और बोलियों को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए।

सतत पर्यटन महत्व :– सतत पर्यटन (Sustainable Tourism) वह दृष्टिकोण है, जो पर्यावरण, समाज और आर्थिक स्थिरता के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए पर्यटन उद्योग को विकसित करने का प्रयास करता है। यह पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने, स्थानीय समुदायों के लाभ को सुनिश्चित करने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए आवश्यक है। सतत पर्यटन का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों, जैव विविधता और सांस्कृतिक धरोहर को बचाना है। यह सुनिश्चित करता है कि पर्यटन गतिविधियां प्राकृतिक परिवेश को नुकसान न पहुंचाएं। राष्ट्रीय उद्यान, जंगल और समुद्री परिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने में मदद करता है।

झारखंड में पर्यटन का प्रभाव :– झारखंड जिसे "वनों की भूमि" भी कहा जाता है, भारत का एक ऐसा राज्य है जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक धरोहर और खनिज संपदा के लिए प्रसिद्ध है। झारखंड में पर्यटन का विशेष महत्व है क्योंकि, यह राज्य की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति में योगदान देता है। राज्य में प्राकृतिक स्थल ऐतिहासिक धरोहर और धार्मिक केंद्र इसे पर्यटन का प्रमुख गंतव्य बनाते हैं।

पर्यटन के प्रकार :– प्राकृतिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन और एडवेंचर पर्यटन।

झारखंड अपनी हरियाली, झरनों और पहाड़ों के लिए जाना जाता है। हुंडरू जलप्रपात, दशम फॉल और नेतरहाट जैसे स्थान पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। बेतला नेशनल पार्क पलामू टाइगर रिजर्व जैसे वन्य जीव अभ्यारण भी प्राकृति प्रेमियों के लिए लोकप्रिय हैं। देवघर में स्थित बैद्यनाथ धाम हिंदू धर्म के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है और लाखों श्रद्धालु हर साल यहां आते हैं। रजरप्पा का छिन्नमस्तीका मंदिर और इटखोरी का बौद्ध धार्मिक स्थल भी धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देते है। झारखंड में आदिवासी संस्कृति और परंपराएं देखने योग्य हैं। सरहुल, करम और मागे पर्व जैसे त्योहार इस संस्कृति का प्रतीक हैं। स्थानीय हस्त शिल्प और लोकनृत्य भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। ट्रैकिंग, रॉक क्लांइविंग और वॉटर राफ्टिंग जैसी गतिविधियां राज्य में पर्यटन को नया आयाम दे रही हैं।

झारखंड में पर्यटन का सकारात्मक प्रभाव :– पर्यटन से स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है। होटल, परिवहन और गाइड सेवाओं में रोजगार के अवसर बढ़ाते हैं। राज्य को पर्यटन से राजस्व प्राप्त होता है, जिससे विकास कार्यों को गति मिलती है। आदिवासी कला व संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान मिलती है। स्थानीय उत्पादों और हस्तशिल्प की मांग बढ़ती है। पर्यटक स्थलों को संरक्षित रखने के लिए सरकार और स्थानीय समुदाय सक्रिय होते हैं। पर्यावरण जागरूकता में वृद्धि होती है। पर्यटन स्थलों के आसपास बुनियादी ढांचे जैसे सड़क, बिजली और पानी

की सुविधाओं में सुधार होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में होमस्टे और स्थानीय बाजारों का विकास होता है।

झारखंड में पर्यटन का नकारात्मक प्रभाव :– अधिक संख्या में प्रर्यटकों के आगमन से कचरा और जल प्रदूषण की समस्या बढ़ती है। कुछ पर्यटन स्थलों पर ध्वनि और वायु प्रदूषण भी होता है। बेतला नेशनल पार्क और हुंडरू फॉल जैसे स्थानों पर अत्यधिक पर्यटन से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव पड़ता है। वन्य जीवों के प्राकृतिक आवास को नुकसान होता है। विदेशी पर्यटकों के आगमन से कभी–कभी स्थानीय संस्कृति में बदलाव देखने को मिलता है। आधुनिकता और वैश्वीकरण के कारण पारंपरिक मूल्यों का क्षरण होता है। पर्यटन का लाभ मुख्य रूप से विकसित क्षेत्रों तक सीमित रह जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसका प्रभाव अपेक्षाकृत कम होता है।

झारखंड में पर्यटन को बढ़ावा देने के उपाय :– बेहतर सड़कों, परिवहन और आवासीय सुविधाओं का निर्माण किया जाए। पर्यटन स्थलों के आसपास शौचालय और सफाई की उचित व्यवस्था हो। पर्यटकों को जागरूक किया जाए कि वह कचरा ना फैलाएं। संवेदनशील क्षेत्रों में पर्यटन की सीमा तय की जाए। झारखंड के पर्यटन स्थलों पर राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार किया जाए। डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर राज्य की सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर को प्रस्तुत किया जाए। स्थानीय लोगों को पर्यटन उद्योग में शामिल किया जाए। होमस्टे और पारंपरिक भोजन की व्यवस्था को बढ़ावा दिया जाए। स्मार्ट पर्यटन के लिए डिजिटल गाइड, मोबाइल ऐप और ऑनलाइन बुकिंग सिस्टम विकसित किया जाए। पर्यटन स्थलों पर वर्चुअल टूर और अन्य तकनीकी सेवाएं उपलब्ध कराई जाए।

पर्यटन बने टिकाऊ विकास का आधार :– पर्यटन का विकास करते समय इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि यह विकास खुद कहीं अपने भविष्य के लिए तो खतरा नहीं बन रहा। विकास के साथ संरक्षण की सोच भी रखी जाए। जो भी नीतियां पर्यटन के लिए बनाई जाएं, वे दीर्घवधि सोच को ध्यान में रखते हुए बनाई जाए। यह सही है कि पर्यटन का विकास अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत आवश्यक है परंतु इस परिपेक्ष में हमें इस बात को भी भुला नहीं देना चाहिए कि पर्यटन कहीं हमारे भविष्य के विनाश का रास्ता तो नहीं बन रहा।

पर्यटन के लिए हम अपना प्रचार करें, अपनी संस्कृति को दूसरे देशों तक पहुंचाएं। परंतु इस प्रचार में भारतीय मूल्यों, परंपराओं की अनदेखी भी नहीं होनी चाहिए। पर्यटन मनोरंजन से आगे बढ़कर संस्कृति का संवाहक बने, तभी उसकी सार्थकता है। इसके लिए पर्यटन की व्यापक सोच रखते हुए ही हमें पर्यटन को कार्यान्वित करना है। विदेशी पर्यटक आएँ तो उनके साथ मित्रता से पेश आए परंतु ऐसा भी नहीं हो कि उनकी सभी उचित अनुचित मांगों को पूरा कर दिया जाए। वे यहां आएँ, यहां के परंपराओं और संस्कृति को जानें–समझे, परंतु अपनी संस्कृति एवं परंपराओं को हम पर थोपें, ऐसा नहीं हो।

"अतिथि देवो भवः" की प्राचीन भारतीय परंपरा का अनुसरण करते हुए यहां आने वाले पर्यटकों को लाजवाब मेहमान नवाजी हम प्रदान करें। पर्यटन को प्राथमिकता में रहकर अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग बनाने की पहल करते हुए इसके सभी नाकारात्मक पहलुओं को सकारात्मक रूप दें, तभी पर्यटन विकास के रूप में भारत नई दिशाएं प्राप्त कर सकेगा। इस दिशा में पहल किसी और को नहीं करनी है, हर उस व्यक्ति को करनी है जो इस देश में रहता है। विश्वव्यापी दृष्टिकोण रखने के साथ ही प्राचीन भारतीय मूल्यों, परंपराओं का निर्वहन करते हुए अगर पर्यटन के विकास को गति दी जाएगी तो निश्चित ही इसका दूरगामी परिणाम विश्व पर्यटन में भारत के सर्वाधिक हिस्से के रूप में हमारे सामने होगा। इसी से सिद्धांत में ही नहीं, व्यवहार में भी हम पर्यटन को उद्योग के रूप में विकसित कर पाएंगे।

निष्कर्ष :– झारखंड में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं, जो राज्य की आर्थिक और सामाजिक प्रगति में योगदान दे सकती हैं। हालांकि, इसके विकास के लिए संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय समुदाय का कल्याण प्रमुख हो। सरकार स्थानीय समुदाय और पर्यटकों के संयुक्त प्रयासों से झारखंड को एक प्रमुख पर्यटक गंतव्य के रूप में स्थापित किया जा सकता है। भारत में पर्यटन का प्रभाव बहुआयामी है। यह देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में योगदान देता है, लेकिन इसके साथ पर्यावरणीय और सांस्कृतिक संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। एक सतत जिम्मेदार पर्यटन दृष्टिकोण हीं देश की प्रगति को दीर्घकालिक रूप में सुनिश्चित कर सकता है। सतत पर्यटन न केवल पर्यावरण और संस्कृति के संरक्षण में मदद करता है, बल्कि स्थानीय समुदाय और अर्थव्यवस्था को भी लाभ पहुंचता है। यह पर्यटन को लंबे समय तक टिकाऊ और जिम्मेदार बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सतत पर्यटन हमारे भविष्य की दिशा है, जहां पर्यटन और पर्यावरण का सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व संभव है। पर्यटन समाज के लिए विकास के अवसर प्रदान करता है, लेकिन इसके नकारात्मक प्रभाव को

नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। संतुलित और सतत पर्यटन विकास से इन नकारात्मक प्रभावों को नियंत्रित किया जा सकता है। सरकार, स्थानीय समुदाय और पर्यटकों को मिलकर जिम्मेदारीपूर्ण पर्यटन को बढ़ावा देना चाहिए ताकि समाज और संस्कृति दोनों का संतुलन बना रहे। पर्यटन न केवल अर्थव्यवस्था का सशक्त माध्यम है, बल्कि यह समाज और संस्कृति के विविध आयामों को जोड़ने का भी जरिया है। सही नीतियों और सतत विकास की रणनीतियों के साथ पर्यटन को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

संदर्भ :–

- व्यास राजेश कु., भारत में पर्यटन, विद्या विहार, नई दिल्ली।
- UNWTO (World Tourism Organization) रिपोर्ट, 2023।
- "भारत में पर्यटनःएक विश्लेषण" नीती आयोग, 2023।
- "Sustainable Tourism Practices", Oxford Journal of Tourism, 2022.
- भारतीय पर्यावरण मंत्रालय की रिपोर्ट, 2023।
- "Tourism Impact on Economy", Harvard Business Review, 2022A.
- झारखंड टूरिज्म पॉलिसी, 2020।
- झारखंड जनजातीय सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान (2020)।
- https://i0.wp.com/geographicbook.com/wp-content/uploads/2024/06/Tourism-Industry.jpeg?resize=1024%2C576&ssl=1.